

आदर्श अखबार

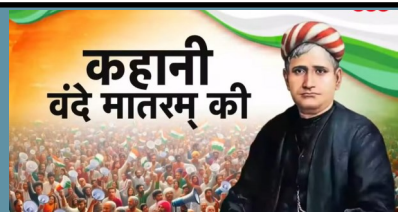
Adarsh Institute of Management and Science (AIMS)

Dhamnod, का विद्यार्थियों के लिए एक उत्कृष्ट प्रकाशन

15 November 2025 No. 14

“वन्दे मातरम्” गीत बंकिम चन्द्र चटोपाध्याय ने 1870 के दशक में लिखा गया था, जिसे 1882 में उनके उपन्यास “आनन्दमठ” में शामिल किया गया था। रविन्द्रनाथ

टैगोर ने इसे संगीत बद्ध किया और 1896 में कांग्रेस अधिवेशन में पहली बार सार्वजनिक रूप से गाया गया था। इसे बाद में भारत के रात्रिय गीत के रूप में अपनाया गया, 1947 में कांग्रेस ने इसे राष्ट्रीय गीत के रूप में चुना और 24 जनवरी 1950 को संविधान सभा ने इसे अधिकारिक मान्यता दी।



वन्दे मातरम् की 150 वी वर्षगांठ पर कार्यक्रम



आदर्श इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड साइंस, धामनोद में राष्ट्रगीत वंदे मातरम् की 150 वी वर्षगांठ पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, के स्कूल ऑफ कॉमर्स के विभागाध्यक्ष प्रो. सुरेश पाटीदार जी मुख्य अतिथि एवं गुजराती वाणिज्य महाविद्यालय, इंदौर के प्रो. राजेंद्र शर्मा विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। संस्था के निर्देशक डॉ. आर. के. पाटीदार सर ने पुष्पगुच्छ से अतिथियों का स्वागत किया।

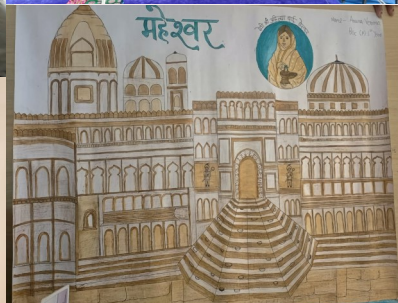
कार्यक्रम में राष्ट्रगीत वंदे मातरम् के सामूहिक गायन के पश्चात, मुख्य अतिथि प्रो. सुरेश पाटीदार सर ने अपने उद्बोधन में वंदे मातरम् गीत के बारे में बताया कि वंदे मातरम् गीत कब, क्यों और किसने लिखा? विशेष अतिथि प्रो. राजेंद्र शर्मा ने भी इस संदर्भ में महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डाला। देशभर में यह कार्यक्रम 7 नवंबर 2025 से 7 नवंबर 2026 तक चलेगा। कार्यक्रम में महाविद्यालय के समस्त शिक्षक एवं विद्यार्थी गण उपस्थित रहे।

शैक्षणिक भ्रमण - जानापाव कुटी जैव

दिनांक-30/10/2025 गुरुवार को आदर्श कॉलेज महाविद्यालय में जैव प्रौद्योगिकी विभाग के विभागाध्यक्ष श्री पंकज स्वर्णकार के द्वारा बीएससी BT फर्स्ट ईयर और सेकंड ईयर के छात्र-छात्राओं को शैक्षणिक भ्रमण के लिए जानापाव कुटी जैव वाटिका कंपनी में कराया गया। साथ ही जैव प्रौद्योगिकी विभाग की सहायक प्राध्यापिका कुमारी पल्लवी प्रजापत मेम और वैष्णवी सोलंकी मैडम और साथ ही केमिस्ट्री विभाग के लेब टेक्नीशियन श्री तुषार कांत रावल सर भी उपस्थित रहे।



महाविद्यालय में मध्यप्रदेश 70वें स्थापना दिवस पर आयोजन



विजेता चार्ट - अरुणा वर्मा BSc Plain I

दिनांक 03/11/2025 को मध्यप्रदेश 70वें स्थापना दिवस के उपलक्ष पर महाविद्यालय में क्विज(QUIZ), पेंटिंग और चार्ट मेकिंग का आयोजन किया गया। जिसमें प्रश्नमंच के प्रथम चरण में कुल 40 प्रतिभागी सम्मिलित हुए, तथा द्वितीय चरण के लिए इनमें से 9 प्रतिभागी चयनित हुए। जिनके तीन दल बनाकर द्वितीय चरण संपन्न कराया गया, जिनमें आडियो-विसुअल के माध्यम से सवाल किये गये। जिसमें उमानंदन लोखंडे, रागिनी पटेल, चन्द्रकला नेतावत विजेता रहे।

विश्व :

14 लाख अमेरिकियों को 43 दिन बाद सैलरी मिलेगा, सबसे लंबा शटडाउन खत्म
अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने बुधवार को एक सरकारी फंडिंग बिल पर साइन किए, जिससे 43 दिन से जारी शटडाउन खत्म हुआ। इस बिल को हाउस ऑफ रिप्रजेंटेटिव्स (निचले सदन) ने 222-209 के अंतर से पास किया था। इसके साथ ही अमेरिका के 14 लाख कर्मचारियों को 43 दिन बाद सैलरी मिलने का रास्ता क्लियर हो गया।

देश :

*10 नवंबर 2025 को दिल्ली के रेड फोर्ट मेट्रो स्टेशन के पास एक कार में धमाका हुआ।

*इस धमाके में 13 लोगों की मौत हो गई और कई लोग घायल हुए। भारत सरकार ने इसे आतंकी हमला करार दिया है।

*14 नवंबर की रात करीब 11:20 बजे नौगाम थाने में ब्लास्ट हो गया, जिसमें 9 लोगों की मौत हो गई और 32 लोग घायल हो गए थे। सैंपलिंग के दौरान हुए ब्लास्ट को फॉरेंसिक टीम ने एक दुर्घटना बताया है। उसने स्पष्ट किया कि यह आतंकी हमला नहीं था। फॉरेंसिक टीम की जांच में सामने आया है कि FSL और NSG की टीम अमोनियम नाइट्रेट, पोटेशियम नाइट्रेट, सल्फर और अन्य केमिकल्स के आखिरी बॉक्स से सैंपल की जांच कर रही थीं, तभी बहुत ज्यादा रोशनी होने के कारण बाहर गर्मी बढ़ी और धमाका हो गया।

*LVM3-M5 रॉकेट: ISRO ने रचा इतिहास, श्रीहरिकोटा से लॉन्च हुआ 'बाहुबली'; अब तक के सबसे भारी सैटेलाइट CMS-03 को देश की जमीन से लॉन्च किया। यह सैटेलाइट 4410 किलो वजन की है। उसकी भार उठाने की क्षमता के कारण 'बाहुबली' कहा जाता है। और इसे LVM3-M5 रॉकेट के जरिए Gesynchronous Transfer Orbit (GTO) में भेज दिया गया।

*भारत के Lucknow शहर को यूनेस्को क्रिएटिव सिटी ऑफ गैस्ट्रोनामी घोषित किया गया है।

*हाल ही में आर्मी स्पोर्ट्स कॉन्क्लेव 2025 का आयोजन भारतीय सेना द्वारा नई दिल्ली किया गया।

*बिहार विधानसभा चुनाव 2025 में एनडीए ने भारी जीत दर्ज की, कुल 243 में से लगभग 202 सीटें जीतीं। भाजपा और जदयू इसकी मुख्य ताकत रहीं, जबकि राजद को सिर्फ लगभग 25 सीटें मिलीं, बावजूद इसके कि उसका वोट शेयर अधिक रहा।

प्रदेश :

*बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में हेलीकॉप्टर पर्यटन सेवा शुरू: पर्यटक अब कान्हा, जबलपुर, मैहर और चित्रकूट, अमरकंटक भी जा सकेंगे इस सेवा के शुरू होने से अब बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व आने वाले पर्यटकों और स्थानीय लोगों को कान्हा, मैहर, चित्रकूट और जबलपुर जैसे प्रमुख पर्यटन एवं धार्मिक स्थलों तक तेज, सुरक्षित और आसान यात्रा की सुविधा मिलेगी।

*11 बड़ी कंपनियां उज्जैन में 600 करोड़ का निवेश करेंगी: 1700 से ज्यादा लोगों को रोजगार मिलेगा; मेडिकल डिवाइस बनाने का हब बनेगा उज्जैन।

लोकतक झील



लोकतक झील मणिपुर राज्य के विष्णुपुर जिले में स्थित पूर्वोत्तर भारत की सबसे बड़ी मीठे पानी की झील है, जो 'तैरती फुमडी' (Phumdi) के लिए विश्वप्रसिद्ध है। फुमडी जैविक पदार्थ, मिट्टी और वनस्पति से बने

तैरते द्वीप हैं, जिन पर लोग घर भी बनाते हैं और खेती भी करते हैं। यह झील लगभग 287 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई है और बारिश के मौसम में इसका आकार बढ़कर 500 वर्ग किलोमीटर तक पहुँच जाता है।

लोकतक झील की खास बातें

- यह दुनिया की एकमात्र ऐसी झील है, जहाँ तैरता हुआ राष्ट्रीय उद्यान — 'केइबुल लामजाओ राष्ट्रीय उद्यान' (Keibul Lamjao National Park) स्थित है, जो मणिपुर के प्रसिद्ध 'संगाई हिरण' (dancing deer/Sangai deer) का आखिरी प्राकृतिक आवास है।

- झील के फुमडी पारिस्थितिकी तंत्र का हिस्सा हैं और जल, मानवीय जीवन, मत्स्यपालन तथा पर्यटन में अहम भूमिका निभाते हैं।

- लोकतक झील को 1990 में 'रामसर स्थल' के रूप में चिन्हित किया गया था, जिससे इसकी अंतरराष्ट्रीय पारिस्थितिकी महत्ता सिद्ध होती है।

- यहाँ लगभग 230 प्रकार की पादप, 100 से ज्यादा पक्षी और 400 प्रकार के जीव पाए जाते हैं।

सांस्कृतिक और पारिस्थितिक महत्व

- हर साल 15 अक्टूबर को 'लोकतक दिवस' मनाया जाता है, जिससे इसकी पारंपरिक और सांस्कृतिक विरासत को सम्मानित किया जाता है।

- झील के आस-पास रहने वाले लोग पारंपरिक नावों और फुमडी से बनी 'आथाफुम' का उपयोग मछली पकड़ने और परिवहन में करते हैं।

चुनौतियाँ और संरक्षण

- लोकतक झील को जल प्रदूषण, जल स्तर में गिरावट और फुमडी के अत्यधिक विस्तार की वजह से पर्यावरणीय समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

- इसके संरक्षण और प्रबंधन के लिए विभिन्न सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं।

लोकतक झील, अपने अद्वितीय जीव-जंतुओं, पारिस्थितिकी और सांस्कृतिक महत्व के कारण न सिर्फ मणिपुर, बल्कि पूरे भारत की धरोहर है।

खेल समाचार :

* ब्रिस्बेन में बारिश ने धोया 5वां टी20 मैच, भारत ने 2-1 से जीती 5 मैचों की सीरीज।



*20 वर्षीय सम्राट राणा ने विश्व निशानेबाजी चैंपियनशिप में पुरुषों की 10 मीटर एयर पिस्टल स्पर्धा में भारत के लिए पहला स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रच दिया। अपने पहले सीनियर फाइनल में, करनल (हरियाणा) के इस युवा निशानेबाज ने विश्व और ओलंपिक चैंपियनों के खिलाफ अदम्य साहस का परिचय दिया, जिनमें इस सीजन के सबसे प्रभावशाली निशानेबाज चीन के हू काल भी शामिल थे। भारी दबाव के बावजूद, राणा ने आखिरी शॉट तक संयम बनाए रखा और शानदार 10.6 अंक बनाकर हू को 0.4 अंकों के मामूली अंतर से पीछे छोड़ते हुए कुल 243.7 अंक हासिल किए।

गुरुग्राम में बन रही हिंद महासागर की सेफ्टी की स्ट्रेटजी: 29 देशों के प्रतिनिधि

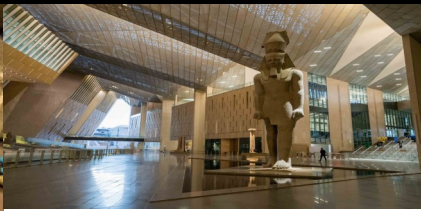
हरियाणा के गुरुग्राम में सोमवार को 3 दिवसीय मैरीटाइम इन्फॉर्मेशन शेयरिंग वर्कशॉप का शुभारंभ हो गया। इस वर्कशॉप में 29 देशों के 41 मैरीटाइम एक्सपर्ट्स हिंद महासागर में सेफ्टी की प्लानिंग को लेकर चर्चा कर रहे हैं। इसे भारत लीड कर रहा है।

इस वर्कशॉप के जरिए हिंद महासागर क्षेत्र के देशों के साथ मजबूत संबंध बनाने और उनसे इन्फॉर्मेशन शेयर को आसान बनाने पर बात की जा रही है। इससे हिंद महासागर क्षेत्र में नशा, हथियारों की स्मगलिंग और ह्यूमन ट्रेफिकिंग को रोकने में मदद मिलेगी।

कार्यक्रम में पहुंचे इंडियन नेवी के वाइस एडमिरल तरुण सोबती ने कहा कि हमें क्षेत्रीय सहयोग बढ़ाने, ब्लू इकोनॉमी को बढ़ावा देने और हिंद महासागर में एक शांतिपूर्ण और सुरक्षित समुद्री क्षेत्र सुनिश्चित करने में सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए।

उन्होंने कहा- यह देखकर बहुत खुशी हो रही है कि यह सेमिनार रूम समुद्र को आपराधिक गतिविधियों से मुक्त करने के लिए एक वैश्विक सोच का केंद्र बन गया है। आज यहां हमारी सामूहिक उपस्थिति इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि हम सहयोग और सहभागिता के माध्यम से समुद्री सुरक्षा और संरक्षा को मजबूत करने पर गंभीर हैं।

मिस्र में दुनिया का सबसे बड़ा म्यूजियम खुला



मिस्र में गीजा के पिरामिडों के पास दुनिया का सबसे बड़ा म्यूजियम ग्रैंड इजिप्शियन शनिवार को आम जनता के लिए खोल दिया है। 3000 साल पुरानी तूतनखामेन की कब्र रखी गई

मिस्र के राष्ट्रपति अब्देल फताह अल-सीसी के साथ दुनिया के कई देशों के नेता उद्घाटन कार्यक्रम में शामिल हुए। इसे बनाने में करीब 1 अरब डॉलर से ज्यादा की लागत आई है।

ग्रैंड इजिप्शियन म्यूजियम (GEM) की सबसे बड़ी खासियत बॉय किंग तूतनखामेन की कब्र है। 1922 में ब्रिटिश पुरातत्वविद हावर्ड कार्टर ने यह कब्र खोजी थी। इसमें 5500 से अधिक वस्तुएं मिली थीं। अब पहली बार यह सब एक ही स्थान पर आम दर्शकों के लिए रखी जा रही है।

तूतनखामेन सिर्फ 9 साल की उम्र में मिस्र की सत्ता पर काबिज हो गया था और 18-19 वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई थी। उसका शासनकाल 1332-1323 ईसा पूर्व था।

यह कब्र लगभग 3,000 वर्षों तक छिपी रही क्योंकि इसे

चट्टानों और मलबे से ढक दिया गया था। GEM में 50000 से अधिक ऐतिहासिक वस्तुएं प्रदर्शित की गई हैं। इनमें 83 टन वजनी, 3200 साल पुरानी रामेसेस द्वितीय की मूर्ति और 4500 साल पुरानी खुफू की नाव शामिल है, जो पिरामिड बनाने वाले फिरोन से जुड़ी है। संग्रहालय में 24000 वर्ग मीटर की स्थायी प्रदर्शनी, बच्चों का म्यूजियम, कॉन्फ्रेंस और एजुकेशन सेंटर, बड़ा संरक्षण केंद्र और कमर्शियल जोन भी बनाया गया है। 12 मुख्य गैलरियां प्रागैतिहासिक काल से लेकर रोमन युग तक के इतिहास को युग और थीम के आधार पर प्रस्तुत करती हैं।

कई वस्तुएं पुराने मिस्र संग्रहालय (काहिरा, तहरीर चौक) से लाई गईं, जबकि कुछ हाल ही में सक्कारा नेक्रोपोलिस सहित प्राचीन कब्रिस्तानों से खुदाई में मिली हैं।

हर साल 80 लाख पर्यटकों के आने की उम्मीद। इस म्यूजियम को मिस्र के पर्यटन उद्योग के लिए इसे एक ऐतिहासिक कदम माना जा रहा है।

COP 30 SUMMIT 2025

जलवायु परिवर्तन पर वैश्विक बैठक

तिथि: 10 से 21 नवंबर 2025

स्थान: बेलेम, पारा, ब्राजील

आयोजक: United Nations Framework Convention on Climate Change (UNFCCC)

उद्देश्य: जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए वैश्विक नीतियों पर चर्चा।

महत्वपूर्ण तथ्य:

COP का अर्थ – Conference of the Parties

COP30 – UNFCCC की 30वीं अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन

COP29 – बाकू, अज़रबैजान (2024)

भारत ने COP30 में लॉन्च हुए Tropical Forests Forever Facility (TFFF) को Observer Member के रूप में जॉइन किया।

TFFF – एक Global Fund है, जिसे ब्राजील द्वारा स्थापित किया गया।

पहली COP – बर्लिन, जर्मनी (1995)

देश परिचय : जर्मनी

भौगोलिक स्थिति : यूरोप महाद्वीप के मध्य भाग में स्थित है। इसके पड़ोसी देश हैं- उत्तर में: डेनमार्क दक्षिण में: ऑस्ट्रिया और स्विट्जरलैंड पूर्व में: पोलैंड और चेक गणराज्य पश्चिम में: फ्रांस, बेल्जियम, लक्जमबर्ग और नीदरलैंड्स

राजधानी : बर्लिन

जनसंख्या : 8.4 करोड़

मुद्रा : यूरो

मुख्य भाषा: जर्मन

प्रमुख नगर : बर्लिन, म्युनिख, कोलोन, हैम्बर्ग, फ्रैंकफर्ट

उद्योग : ऑटोमोबाइल (Volkswagen, BMW, Mercedes-Benz), मशीनरी, केमिकल, इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मास्युटिकल्स।

प्रमुख धर्म: इसाई धर्म

संस्कृति: जर्मनी का योगदान संगीत (Beethoven, Bach), दर्शन (Kant, Nietzsche), साहित्य (Goethe, Schiller) और कला के क्षेत्र में अत्यधिक है। Oktoberfest जर्मनी का प्रसिद्ध त्यौहार है, जिसे बियर और पारंपरिक संगीत के साथ मनाया जाता है।

शिक्षा और विज्ञान :

जर्मनी में उच्च शिक्षा निःशुल्क या बहुत सस्ती है।

जर्मनी के विश्वविद्यालय विश्व के शीर्ष शिक्षण संस्थानों में गिने जाते हैं। वैज्ञानिक अनुसंधान और तकनीकी विकास में जर्मनी अग्रणी है।

पारंपरिक परिधान: Lederhosen (पुरुषों के लिए) और Dirndl (महिलाओं के लिए)।

खनिज : कोयला, लोहा, पोटाश, तांबा, यूरेनियम, सीसा, जिंक

झील : लेक कॉन्स्टेंस, लेक किस्मी, लेक स्टोनबर्ग, अमरसि लेक

नदी : राइन, डैन्यूब, एल्बे

पर्यटन स्थल : ऐल्प्स पर्वतमाला

जोहरान ममदानी न्यूयॉर्क के पहले भारतीय

मूल के मेयर बने

भारतीय मूल के डेमोक्रेट पार्टी के उम्मीदवार जोहरान ममदानी ने अमेरिकी शहर न्यूयॉर्क के मेयर का चुनाव जीत लिया है। वे पिछले 100 सालों में न्यूयॉर्क के सबसे युवा, पहले भारतवंशी और पहले मुस्लिम मेयर होंगे। उनका जन्म 18 अक्टूबर 1991 को युगांडा के कंपाला में हुआ। वे



मानसून वेडिंग और सलाम बॉम्बे जैसी फिल्मों डायरेक्ट करने वाली मीरा नायर के बेटे हैं।

7 साल की उम्र में परिवार के साथ न्यूयॉर्क आ गए। बैंक स्ट्रीट स्कूल फॉर चिल्ड्रन और ब्रॉन्क्स हाई स्कूल ऑफ साइंस से पढ़ाई की।

2014 में अफ्रीकन स्टडीज में बैचलर्स डिग्री हासिल की। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प पहले ही चेतावनी दे चुके हैं कि वे न्यूयॉर्क की फेडरल फंडिंग रोक सकते हैं। अगर वे ऐसा कदम उठाते हैं तो ममदानी की पेशानी बड़ सकती है।

जीवन परिचय : बिरसा मुंडा

काव्य रचना



बिरसा मुंडा एक भारतीय आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी, धार्मिक नेता और लोक नायक थे, जिनका जन्म 15 नवंबर 1875 को झारखंड के उलिहातु में हुआ था। उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ 'उलगुलान' आंदोलन का नेतृत्व किया और आदिवासियों को उनके अधिकारों और पारंपरिक भूमि व्यवस्था के लिए एकजुट किया। उन्हें "धरती अब्बा" (पृथ्वी के पिता) और "भगवान" के नाम से जाना जाता है।

प्रारंभिक जीवन: 1875 में एक मुंडा परिवार में जन्मे, बिरसा ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा सालगा में जयपाल नाग की देखरेख में प्राप्त की। पढ़ाई के लिए उन्होंने कुछ समय के लिए ईसाई धर्म अपनाया, लेकिन बाद में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन और आदिवासी संस्कृति पर हमलों के विरोध में इसे छोड़ दिया और अपना पारंपरिक धर्म अपनाया। **आंदोलन और नेतृत्व:** 19वीं सदी के अंत में, उन्होंने ब्रिटिश राज के खिलाफ आदिवासी प्रतिरोध का नेतृत्व किया। उन्होंने "अबुआ दिशुम, अबुआ राज" (अपना देश - अपना राज) का नारा दिया और जमींदारों और मिशनरियों के शोषण के खिलाफ लड़ाई लड़ी। उन्होंने आदिवासी धार्मिक सहस्राब्दी आंदोलन का नेतृत्व किया और ब्रिटिश शासन को चुनौती दी।

धर्म और आध्यात्मिकता: ईसाई धर्म छोड़ने के बाद, उन्होंने एक नया पंथ शुरू किया जिसे 'बिरसैत' के नाम से जाना जाता है, जो एकेश्वरवाद और पारंपरिक आदिवासी मान्यताओं पर आधारित था।

विरासत: बिरसा मुंडा को आदिवासी समाज के लिए एक भगवान माना जाता है। 15 नवंबर को उनके सम्मान में 'जनजातीय गौरव दिवस' मनाया जाता है।

निधन: वर्ष 1900 में बिरसा को गिरफ्तार किया गया और 19 जून 1900 को वे मात्र 25 वर्ष की आयु में शहीद हो गए। उनकी विरासत ने आगे चलकर छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम (1908) को प्रेरित किया, जिसने जनजातीय भूमि अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित की।



रिशतों में बंधा है जीवन जग मे,
हर रिश्ता बेजोड़ है,
सब रिश्तों में भाई-बहन का,
रिश्ता जग मे अनमोल है।

बचपन मे होते रहता है,
बात-बात मे झगड़ा,
झगड़ा और कर देता है,
रिश्ते की गांठ को तगड़ा।

खाने को भी अक्सर है,
दोनों मे लड़ाई हो जाती,
भाई को राखी बांध कलाई मे,
खुद मिठाई है खा जाती।

पढ़ने के दिनों में भी करते,
एक दूजे की खिंचाई,

बहना मुंह बिचकाती ऐसे,
ना छुएगी कभी कलाई।

पलभर मे हीं दे देते हैं,
अपनी-अपनी सफ़ाई,
क्षणभर मे ही थाम भी लेते,
एक-दूजे की कलाई।

पता न चलता दोनों को,
पर वक्त है ऐसे बीत जाता,
भाई का घर छोड़ कर जाना,
बहना को है पड़ जाता।

करता है विदाई बहन का भाई,
भावुकता से है भर जाता,
आंखों से ऐसे आंसू निकलते,
जैसे हो नदियों की धारा।

भाई-बहन का जीवन ज्यादा,
एक-दूजे से दूर गुजरता है,
पर बहना लेती सांसें तभी,
भाई का दिल धड़कता है।

- खुशबु जायसवाल

B.Sc.(C.S.) III year

हमारे पर्यटन स्थल- ऊन (खरगोन)



यह स्थान खरगोन से 18 किमी की दूरी पर है। यह स्थान परमार-कालीन कल्याण शिव-मंदिर और जैन मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। यहां एक बहुत प्राचीन महालक्ष्मी-नारायण मंदिर भी स्थित है। खजुराहो के अतिरिक्त, यहां ही परमार-कालीन प्राचीन मंदिर हैं।

यह खरगोन – जुलवानिया – बड़वानी – बड़ौदा मार्ग पर, खरगोन मुख्यालय से 18 किमी पश्चिम में स्थित है। इस स्थान से प्राप्त पुरातात्विक अवशेषों से पता चलता है कि यह स्थान लगभग 1000 वर्ष पहले उन्नत अवस्था में था। यहां मालवा के परमार राजाओं द्वारा निर्मित 12 मंदिरों का एक समूह है। इनमें से अधिकांश मंदिर जर्जर अवस्था में हैं। ये सभी मंदिर खजुराहो के समकालीन हैं। इनका निर्माण परमार राजा उदयादित्य ने करवाया था।

इसी राजवंश के एक अन्य राजा देवपाल द्वारा महिष्मती में जारी एक ताम्रपत्र ऊन के सिद्धेश्वर मंदिर में मिला है। इस ताम्रपत्र के अनुसार, प्रतिहार साम्राज्य के विघटन के बाद, लगभग 812 ईस्वी के आसपास, निमाड़ का कुछ हिस्सा परमार राजाओं के आधिपत्य में था, जिन्होंने इस भूमि पर लगभग 400 वर्षों तक शासन किया। यह स्थान परमार-काल के शिव-मंदिर और जैन मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। यहां एक बहुत प्राचीन महालक्ष्मी-नारायण मंदिर भी स्थित है। खजुराहो के अलावा, यह परमार युग के प्राचीन मंदिरों वाला एकमात्र स्थान है।

महालक्ष्मी मंदिर – यह मंदिर गांव से 1.5 किलोमीटर दक्षिण में स्थित है।

बल्लालेश्वर मंदिर – यह मंदिर गांव के उत्तर-पश्चिम में स्थित है। इसका निर्माण राजा उदयादित्य के पुत्र राजा बल्लाल ने करवाया था। यह एक राज्य संरक्षित स्मारक है।

चौबारा डेरा नंबर 1 – राजा उदयादित्य द्वारा निर्मित यह मंदिर ग्राम पंचायत के पास है।

चौबारा डेरा नंबर 2 – यह मंदिर मुख्य मार्ग पर अस्पताल के सामने स्थित है। पहले यहां भगवान शांतिनाथ की मूर्तियां थीं, जिनकी प्रतिष्ठा 1242 ईस्वी माघ सुदी 7 को होने का उल्लेख है। वर्तमान में ये मूर्तियां केंद्रीय पुरातत्व संग्रहालय में रखी गई हैं। शांतिनाथ मंदिर / ग्वालेश्वर मंदिर – यह जैन मंदिर गांव के दक्षिण में एक छोटी पहाड़ी पर स्थित है।

पुराने समय में, स्थानीय ग्वाले तूफान/पानी आने की स्थिति में इस मंदिर में आश्रय लेते थे, इसलिए इसे ग्वालेश्वर मंदिर भी कहा जाता है। जैन धर्म के अनुयायी ऊन को निर्वाण स्थल मानते हैं, इसलिए इस स्थान को पावागिरी भी कहा जाता है।



राज्य परिचय : पश्चिम बंगाल

भौगोलिक स्थिति : भारत के पूर्वी भाग में स्थित राज्य है।

सीमाएँ—पूर्व में: बांग्लादेश उत्तर में: असम और सिक्किम पश्चिम में: बिहार और झारखंड दक्षिण-पश्चिम में: ओडिशा दक्षिण में: बंगाल की खाड़ी

राजधानी : कोलकाता

आधिकारिक भाषा : बांग्ला

क्षेत्रीय भाषाएँ: हिंदी, उर्दू, अंग्रेज़ी, नेपाली (दार्जिलिंग क्षेत्र में)

राज्य पशु : फिशिंग कैट

राज्य पक्षी : सफ़ेद गले वाली रामचरैया

राज्य फूल : हरसिंघार

राज्य वृक्ष : चितवन

मुख्य उद्योग: अर्थव्यवस्था (Economy) कृषि और उद्योग—दोनों में विकसित राज्य।

प्रमुख उद्योग: जूट, चाय, इस्पात, वस्त्र, आईटी, चमड़ा, पेट्रोकेमिकल्स

प्रमुख औद्योगिक नगर: कोलकाता, दुर्गापुर, आसनसोल, हल्दिया, सिलीगुड़ी

कृषि (Agriculture)- मुख्य फसलें: चावल, जूट, चाय, आलू, गन्ना, गेहूं दार्जिलिंग की चाय विश्व प्रसिद्ध है।

मछली पालन (मत्स्य पालन) और बागवानी भी महत्वपूर्ण हैं।

नदी : गंगा (हुगली शाखा), दामोदर नदी, तीस्ता नदी, सुवर्णरेखा नदी, महानंदा नदी।

पर्यटन स्थल : कोलकाता – विक्टोरिया मेमोरियल, हावड़ा ब्रिज, दक्षिणेश्वर मंदिर, इंडियन म्यूजियम

दार्जिलिंग – टाइगर हिल, चाय बागान, हिमालयन टॉय ट्रेन

सुंदरबन – मैंग्रोव वन, रॉयल बंगाल टाइगर

दीघा – समुद्री तट

कालिम्पोंग – बौद्ध मठ, प्राकृतिक सौंदर्य

मुर्शिदाबाद – ऐतिहासिक इमारतें

शांतिनिकेतन – रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा स्थापित शिक्षा केंद्र

कविता : कोई अर्थ नहीं



नित जीवन के संघर्षों से

जब टूट चुका हो अंतर्मन

तब सुख के मिले समंदर का

रह जाता कोई अर्थ नहीं ।

जब फसल सूख कर जल के बिन

तिनका - तिनका बन गिर जाए

फिर होने वाली वर्षा का

रह जाता कोई अर्थ नहीं ।

संबंध कोई भी हो लेकिन

यदि दुख में साथ न दे अपना

फिर सुख में उन संबंधों का

रह जाता कोई अर्थ नहीं ।

छोटी - छोटी खुशियों के क्षण

निकले जाते हैं रोज जहां

फिर सुख की नित्य प्रतीक्षा का

रह जाता कोई अर्थ नहीं ।

मन कटुवाणी से आहत हो

भीतर तक छलनी हो जाएं

फिर बाद कहे प्रिय वचनों का

रह जाता कोई अर्थ नहीं ।

सुख साधन चाहे जितने हो

पर काया रोगों का घर हो

फिर उन अनगिनत सुविधाओं का

रह जाता कोई अर्थ नहीं ।

राष्ट्रकवि- श्री रामधारी सिंह दिनकर

महू में इन्फैंट्री मैराथन 'ऑपरेशन सिंदूर' को समर्पित



सेना के अधिकारियों और नागरिकों ने लगाई दौड़; हथियारों की प्रदर्शनी लगी ।

महू में रविवार को सेना की ओर से इन्फैंट्री मैराथन 'रनवीर 7.0' का आयोजन किया गया।

यह मैराथन 'ऑपरेशन सिंदूर' को समर्पित

थी, जिसमें सेना के अधिकारियों और

हजारों नागरिकों ने एक साथ दौड़ लगाई।

मैराथन सुबह 6.15 बजे शंकर लक्ष्मण

मैदान से शुरू हुई इस मैराथन में 5

किलोमीटर, 10 किलोमीटर और 21

किलोमीटर की तीन श्रेणियां थीं।

यह मैराथन देशभर में अपनी अनूठी भागीदारी के लिए जानी जाती है, जहां सेना और आम नागरिक मिलकर दौड़ते हैं। महू देश का एकमात्र स्थान है जहां सेना इस तरह के संयुक्त आयोजन करती है। कार्यक्रम स्थल को आर्मी बैटल फील्ड की तरह तैयार किया। मैराथन के लिए कार्यक्रम स्थल शंकर लक्ष्मण मैदान को विशेष रूप से सजाया गया था। इसे 'आर्मी बैटल फील्ड' की तरह तैयार किया गया, जिससे प्रतिभागियों और दर्शकों को एक अनूठा अनुभव मिला।

दौड़ के दौरान कई अन्य आकर्षण भी थे। सेना के पाइप बैंड और बास बैंड ने देशभक्ति गीतों की प्रस्तुतियां दीं। इसके साथ ही, आम जनता के लिए हथियारों की एक प्रदर्शनी भी लगाई गई थी।

आसमान में सेना के तीन माइक्रोलाइट विमानों ने भी उड़ान भरी। इन विमानों ने तिरंगा, सेना का ध्वज और इन्फैंट्री डे का ध्वज लहराते हुए दर्शकों का मन मोह लिया।

DAILY ENGLISH VOCABULARY

हिंदी शब्दार्थ

Basic	Vs	Advance	श्रोता	-	सुननेवाले
Defame		Vilify	आकर्षित	-	ध्यान खींचना
Praise		Acclaim	सुमधुर	-	मीठी, कर्णप्रिय
Decrease		Wane	गायकी	-	गाने की कला
Increase		Wax	हासिल	-	पाना, प्राप्त करना
Resign		Abdicate	भरोसा	-	विश्वास, यकीन
Secure		Acquire	भेंट	-	मुलाकात
Alert		Vigilant	भटकने	-	धूमने
Careless		Negligent	शिष्य	-	चेला, विद्यार्थी
Prohibited		Proscribed			
Permitted		Permissible			
Lawful		Legitimate			
Unlawful		Illicit			

हमारे पर्व - देव दिवाली

देव दीपावली 2025 वाराणसी में कार्तिक पूर्णिमा पर 5 नवंबर को मनाई गई, जिसकी विशेषता लाखों दीयों से सजे गंगा घाट और एक भव्य 3D प्रोजेक्शन मैपिंग और लेजर शो था। इस वर्ष, गंगा के घाटों को 15 लाख से अधिक दीयों से रोशन किया गया, जिसमें 10 लाख से अधिक सरकारी प्रयास से और 5 लाख स्वयंसेवी संगठनों द्वारा जलाए गए थे। इसके अतिरिक्त, एक 25 मिनट का 3D प्रोजेक्शन मैपिंग और लेजर शो आयोजित किया गया, जिसमें काशी के इतिहास और आध्यात्मिकता को दर्शाया गया। मुख्य विशेषताएं: लाखों दीये: घाटों और कुंडों पर 15 लाख से अधिक दीये जलाए गए, जिनमें से लगभग 1 लाख दीये गाय के गोबर से बनाए गए थे। भव्य लेजर शो: 25 मिनट का एक 3D प्रोजेक्शन मैपिंग और लेजर शो आयोजित किया गया, जो काशी के इतिहास और संस्कृति को जीवंत करता है। शंखनाद और डमरू: उत्सव की शुरुआत शंखनाद और डमरू की गूंज के साथ हुई। संचालन: शाम 5:15 बजे से 5:50 बजे के बीच सभी घाटों पर दीप प्रज्ज्वलन हुआ, जिसके बाद मुख्य घाटों पर उत्सव शुरू हुआ। आकर्षण: गंगा आरती, नाव की सवारी, और रत्नेश्वर महादेव मंदिर के पास का मनमोहक दृश्य भी उत्सव का हिस्सा था। देव दिवाली क्यों मनाई जाती है:-

देव दिवाली, जिसे देवताओं की दिवाली भी कहा जाता है, कार्तिक पूर्णिमा के दिन मनाई जाती है। यह पर्व भगवान शिव द्वारा राक्षस त्रिपुरासुर का वध करने की खुशी में मनाया जाता है। माना जाता है कि इस दिन देवताओं ने खुशी में दीप जलाकर उत्सव मनाया था। त्रिपुरासुर का वध: पौराणिक कथाओं के अनुसार, भगवान शिव ने कार्तिक पूर्णिमा के दिन शक्तिशाली राक्षस त्रिपुरासुर का वध किया था। देवताओं का उत्सव: त्रिपुरासुर के अत्याचारों से मुक्ति मिलने के बाद, देवताओं ने स्वर्ग में दीप जलाकर जश्न मनाया था। इसी के उपलक्ष्य में यह पर्व मनाया जाने लगा। सत्य की जीत: यह पर्व बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है और यह संदेश देता है कि अंधकार चाहे कितना भी गहरा क्यों न हो, अच्छाई की जीत होती है। काशी में विशेष महत्व: देव दिवाली, विशेष रूप से वाराणसी में भव्य रूप से मनाई जाती है, जहां गंगा के घाटों को दीयों से सजाया जाता है।



दशावतार - प्रथम अवतार : मत्स्य अवतार



भगवान विष्णु के दस दिव्य अवतारों में से पहला अवतार, मत्स्य अवतार है। इस अवतार में भगवान विष्णु ने मछली का रूप धारण किया था। हयग्रीव नामक एक राक्षस ने ब्रह्मा जी के मुख से निकले हुए वेदों को चुराकर गहरे समुद्र में छिपा दिया, जिससे सृष्टि का ज्ञान और धर्म खतरे में पड़ गया।

सत्यव्रत नाम के एक धार्मिक और न्यायप्रिय राजा थे। वे विष्णु भक्त थे। एक दिन नदी में स्नान के समय उनके हाथों में एक छोटी मछली आ गई। वह राजा से बोली, राजन, मेरी रक्षा कीजिए बड़ी मछलियाँ मुझे खा जाएँगी। उन्होंने उसे अपने कमंडल में रख लिया। लेकिन, वह तुरंत ही इतनी बड़ी हो गई कि कमंडल में समा नहीं पाई। राजा ने उसे एक मटके में रखा, लेकिन वह और भी बड़ी हो गई।

राजा ने उसे एक तालाब, एक झील और अंत में समुद्र में डाल दिया। जैसे-जैसे राजा ने जगह बदली, मछली का आकार भी बढ़ता गया। राजा समझ गए कि यह कोई साधारण मछली नहीं, बल्कि स्वयं भगवान विष्णु हैं। तब विष्णु जी ने अपने असली रूप में प्रकट होकर राजा सत्यव्रत से कहा, राजन, एक महाप्रलय आएगा। पूरी पृथ्वी जल में डूब जाएगी। तुम्हें एक विशाल नाव मिलेगी। उस नाव में तुम सभी प्रकार के जीवों, पेड़-पौधों के बीज, और सप्तऋषियों को लेकर बैठ जाना। मैं उस नाव को सुरक्षित रखूँगा। जैसा कि भगवान ने कहा था, मूसलाधार बारिश शुरू हुई और पूरी पृथ्वी जल में डूबने लगी।

तब राजा सत्यव्रत सभी जीवों के साथ नाव में बैठ गए। तभी एक विशाल साँग वाली मछली प्रकट हुई, जो स्वयं भगवान मत्स्य थे। उन्होंने राजा को वेदों का ज्ञान और सृष्टि के रहस्य बताए।

जब जल प्रलय समाप्त हुआ, भगवान मत्स्य ने हयग्रीव राक्षस का वध किया और वेदों को वापस लाकर ब्रह्मा जी को लौटा दिया। इसके बाद, राजा सत्यव्रत ने एक नई सृष्टि का निर्माण किया।

भगवान विष्णु ने मत्स्य अवतार लेकर न केवल वेदों की रक्षा की, बल्कि जल प्रलय से पूरी सृष्टि को बचाकर एक नए युग की शुरुआत की। जब भी धर्म और ज्ञान खतरे में होते हैं, भगवान स्वयं उसकी रक्षा के लिए प्रकट होते हैं।

साभार - स. प्रा. पूजा कुशवाह, रसायनशास्त्र विभाग

राजनैतिक व्यंग

सबसे पहले ठेकदार मुरारीलाल को मंच बनाने हेतु आमंत्रित.....



संपादन मंडल :

Patron - Dr. R. K. Patidar
Director, AIMS

Prof. Yashpal Vyas PhD
Principal, AIMS

Asst. Prof. Pryanka Tiwari
Dept. of History, AIMS

Asst. Prof. Rani Sharma
Dept. of Computer Science, AIMS

Asst. Prof. Neha Verma
Dept. of Botany, AIMS

Contributors:
Asst. Prof. Ravina Chouhan
Dept. of Zoology, AIMS

Asst. Prof. Pankaj Swarnkar
Dept. of Biotechnology, AIMS